



## तुझ को भुला ना पाऊँगा -3

“वो बोली- मैं अगले महीने यहाँ रहने आ रही हूँ, और वो भी पूरे 2 महीने के लिए, और तुम्हारी वो तमन्ना मैं उस वक्त पूरी करूँगी और जिस दिन मैं तुम्हें बुलाऊँगी, तुम्हें आना पड़ेगा ...”

**Story By: dalbir singh (dr.dalbir.singh)**

**Posted: Friday, August 7th, 2015**

**Categories: [जवान लड़की](#)**

**Online version: [तुझ को भुला ना पाऊँगा -3](#)**

## तुझ को भुला ना पाऊंगा -3

एक दिन वो जब मायके आई तो अपने घर उसे 2-3 दिन रुकना था तो वो हमारे घर आ गई जब मेरी माँ रसोई में गई तो उसने बड़े शिकयती लहजे में कहा- मैंने कहा था ना कि मुझे भगा कर ले चलो, पर तुम माने नहीं। अब मुझे अपनी शक्त भी नहीं दिखाते मेरा कसूर तो बता दो, क्या मांगती हूँ तुमसे, सिर्फ़ यही ना कि तुम्हारा चेहरा देख लूँ ?

उसकी यह बात सुन कर मैं शर्मिंदा सा हो गया और सिर झुका कर कहा- नहीं, ऐसी बात नहीं है, तुम अब किसी और की हो चुकी हो, और मैं तुम्हारे जीवन में अब कोई दुख नहीं... पर उसने मेरी बात काटते हुए कहा- मेरा मन पहले भी तुम्हारा था, अब भी तुम्हारा है। यह शादी मैंने मज़बूरी में करी है, वो सामाजिक तौर पर मेरा मलिक है पर मानसिक तौर पर नहीं !

‘और इसके ज़िम्मेदार तुम हो अमर !’ वो एक पल रुक कर बोली ।

मैं अगले महीने यहाँ रहने आ रही हूँ 2 महीने के लिए !

इतनी देर में मेरी माँ चाय बना कर ले आई तो वो चुप हो गई। चाय पीकर जब जाने लगी तो बोली- शाम को घर आना !

मैंने हाँ मे सिर हिलाया और गहरी सोच में पड़ गया ।

शाम को मैं करीब 4:30 बजे उनके घर पहुँचा तो वो भाभी के घर बैठी थी, भाभी से बोली- भाभी, आप चाय बना लो और ज़रा आराम से बनाना टाइम लगा कर !

भाभी को सारी बात का पता तो था ही, वो उठीं और मुस्कुरा कर चली गई ।

भाभी के जाते ही वो उठ कर मेरे पास आ गई और मेरे चेहरे को अपने दोनो हाथों में पकड़ कर बोली- अमर, मेरी जान तुम नहीं जानते कि मेरे जीवन में तुम्हारी क्या जगह है ? पर

यह याद रखना कि मैं मर तो सकती हूँ पर तुम्हें नहीं भुला सकती और मैं जानती हूँ कि इस बात का तुम्हें भी पता है।

मैं कुछ देर तक उसके मुँह की तरफ देखता रहा और फिर मैंने बैठे बैठे ही अपनी बाहों में भर लिया और उसके कंधे पर सिर रख कर रोने लगा और वो मेरे कंधे पर सिर रख रोने लगी, अपनी दोनों बाहें मेरे गिर्द लपेट दीं, काफ़ी देर तक हम दोनों कुछ नहीं बोले और रोते रहे।

फिर एक झटके से मुझसे वो अलग हो गई और बोली- सुनो, जो मैं कहने जा रही हूँ, उसे गौर से सुनो !

मैं प्रश्नवाचक निगाहों से उसकी ओर देखने लगा तो वो पुनः बोली- तुम्हें याद है, एक रात तुम मेरे पास रहे थे और मैंने उस रात तुम्हें कुछ भी नहीं करने दिया था ?

मैंने सिर्फ़ सिर हिलाया तो वो बोली- मैं अगले महीने यहाँ रहने आ रही हूँ, और वो भी पूरे 2 महीने के लिए, और तुम्हारी वो तमन्ना मैं उस वक्त पूरी करूँगी।

मैंने उसकी बात का विरोध करने के लिए मुँह खोला लेकिन उसने मेरे मुँह पर हाथ रख दिया और बोली- तुम मत बोलो, बस मेरी सुनो, और जिस दिन मैं तुम्हें बुलाऊँगी, तुम्हें आना पड़ेगा, यह तुम्हें उस मोहब्बत की कसम है जो कि तुमने मुझे करी थी, हाँ अगर तुम मेरे सिर पर हाथ रख कर यह कह दो कि तुमने मुझसे प्यार नहीं किया था तो मैं तुम्हें नहीं कहूँगी आने के लिए !

इतना बोल कर वो चुप हो गई और मेरी आँखों में आँखें डाल कर देखने लगी, उसके इस सवाल का मेरे पास कोई जवाब नहीं था और मैंने खुद को शर्मिंदा सा महसूस करा और सिर झुकाकर बोला- ठीक है, मैं हारा !

मेरा यह जवाब सुनकर वो सिर्फ़ मुस्कुराई और कुछ भी नहीं बोली।

थोड़ी देर बाद भाभी जी चाय बना कर ले आई, हम तीनों ने साथ साथ चाय पी और थोड़ी

देर के बाद मैं अपने मेडिकल स्टोर पर चला गया।

इस बीच मे मेरे से बड़े वाले भाई और पापा जी वापस दिल्ली चले आए थे, मैं और माँ वहीं रह रहे थे, बड़े भाई साहब वहीं निरंजन अंकल के घर पर ही रह रहे थे।

वो महीना गुज़र कर नया महीना कब आ गया, पता भी ना चला। बस इन दिनों मैं कुछ उदास रहता था और मैंने कुछ गज़लें लिखनी शुरू कर दी थीं।

एक दिन सुबह भाई साहब ने मुझे कहा- तुझे तेरी भाभी बुला रही थी, एक बार घर चले जाना!

मैंने कहा- जी भा... जी!

दोपहर को मैं भाई साहब के घर गया तो भाभी जी ने कहा- आज तेरे भाई साहब बाहर जा रहे हैं और तुझे रात इस घर में सोना है।

मैंने कहा- जी, भरजाई जी!

यह कह कर मैं वहाँ से निकल आया और घर आकर माँ से कहा- आज भाअजी बाहर जा रहे हैं तो आज रात भाअजी के घर सोने जाऊँगा।

तो मम्मी बोली- ठीक है, टाइम से चले जाना!

इसके बाद मैं वापस अपनी दुकान पर चला गया।

शाम को मैं घर से 8 बजे के करीब निकला और 10 मिनट में भाई साहब के घर पहुँच गया।

मेरे पहुँचने तक खाना तैयार था, मैंने खाना खाया और कुछ देर टी वी देखने के बाद मैंने

कहा- भरजाई जी, मुझे कहाँ सोना है?

तो भाभी जी ने कहा- तुम इस कमरे में सो जाओ और मैं बच्चों के साथ दूसरे कमरे में सोऊँगी!

मैंने कहा- ठीक है।

करीब आधे घंटे में बच्चे सो गये और भाभी जी उनको दूसरे कमरे में लिटा आई और मुझसे बोली- सोने से पहले टी वी बंद कर देना ! मैंने कहा- जी अच्छा !

और उनके दूसरे कमरे में जाने के बाद 10-12 मिनट के बाद ही टी वी बंद कर दी और लेट गया।

कहानी जारी रहेगी।

[dr.dalbir66@yahoo.com](mailto:dr.dalbir66@yahoo.com)

## Other stories you may be interested in

### बिंदास गर्लफ्रेंड के साथ बिंदास सेक्स

दोस्तो, मेरा नाम सोनू है, मैं पुणे के रहने वाला हूँ. मैं आज आपको मेरे जीवन की पहली चुदाई की कहानी बताने जा रहा हूँ. अन्तर्वासना पर यह मेरी पहली कहानी है. चूंकि मैं पहली बार लिख रहा हूँ तो [...]

[Full Story >>>](#)

### पड़ोसन भाभी के साथ सेक्स एंड लव-3

भाभी की चूत चुदाई कहानी के पिछले भाग पड़ोसन भाभी के साथ सेक्स एंड लव-2 में आपने पढ़ा था कि मैंने नैना को एक बार चोद दिया था और वो मेरे बाजू में लेटी हुई थी. उसकी आंखों में अभी [...]

[Full Story >>>](#)

### एक्स साली की चूत गांड की चुदाई का मजा

प्यार की चाहत वो कर सकती है, जिसकी कोई कल्पना भी न करे. मेरी शादी एक बहुत ही सुन्दर लड़की से हुई. लेकिन शादी के एक साल बाद ही एक दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई. मेरी एक ही साली [...]

[Full Story >>>](#)

### क्लासमेट को सेक्स के लिए पटाया

नमस्कार, मेरा नाम विशाल है. मैं वडोदरा, गुजरात का रहने वाला हूँ. मैं शरीर से पतला हूँ, लेकिन स्टेमिना अच्छा रखता हूँ. मेरी पिछली कहानियों ट्रेन में बुर्के वाली की चूत चुदाई की भाभी की चुदाई के लिए वक्त नहीं [...]

[Full Story >>>](#)

### गर्ल फ्रेंड की सील तोड़ी उसके घर पर

चूत की रानियों और ठरकी सज्जनों को मेरा प्रणाम। मैं टोनी, सोनीपत हरियाणा से एक बार फिर अपनी दूसरी कहानी लेकर आप लोगों की सेवा में हाजिर हूँ। मेरी पहली कहानी चाची की कामवासना और सेक्स को भरपूर प्यार देने [...]

[Full Story >>>](#)

